B.A Part - I Paper II

मुद्रा-स्फीति का अर्थ
(Meaning of Inflation)

मुद्रा-स्फीति की परिभाषा को लेकर अर्थशास्त्रियों में मतभेद है और विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इसकी अलग-अलग परिभाषा दी है फिर भी मुद्रा-स्फीति की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित है:-

क्राउथर (Crowther) के अनुसार :- मुद्रा-स्फीति वह स्थिति है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिर रहा हो अथवा वस्तुओं का मूल्य बढ़ रहा हो "Inflation is a state in which the value of money is falling i.e prices are rising" क्राउथर की यह परिभाषा देखने में काफी सरल लगती है लेकिन यह मुद्रा-स्फीति की एक संतोषजनक परिभाषा नहीं कही जा सकती परिभाषा के अनुसार बढ़ते हुए प्रत्येक मूल्य को मुद्रा-स्फीति की संज्ञा दी जाती है, लेकिन ऐसी बात नहीं है। सभी बढ़ते हुए मूल्य हानिकारक एवं मुद्रा-स्फीति के सूचक नहीं होते। उदाहरण के लिए, मंदी के पश्चात उद्धार (Recovery) की स्थिति में जब मूल्य धीरे धीरे बढ़ते हैं तो वे अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक होते हैं। अतः सभी बढ़ते हुए मूल्य मुद्रा-स्फीति के सूचक नहीं हैं।

केमरर (Kemmerer) के अनुसार :- चालू व्यवसाय के भौतिक परिमाण की तुलना में मुद्रा एवं जमा-मुद्रा की अधिकता होना ही मुद्रा-स्फीति है। "Inflation is too much money and deposit currency in relation to the physical volume of business being done.)" दूसरे शब्दों में, इस परिभाषा के अनुसार जब व्यापार के परिमाण अथवा वस्तुओं और सेवाओं के परिमाण की तुलना में मुद्रा की मात्रा अधिक हो जाती है और मूल्य-तल बढ़ जाता है तो उसे मुद्रा स्फीति की स्थिति कहते हैं। यह परिभाषा कुछ हद तक संतोषजनक जान पड़ती है क्योंकि यह बतलाती है कि मुद्रा की मात्रा व्यवसाय की आवश्यकताओं से अधिक हो जाय तो मुद्रा-स्फीति का सृजन होता है। फिर भी यह परिभाषा स्पष्ट नहीं है, क्योंकि इसके आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि मुद्रा की वह कौन सी मात्रा है जो व्यवसाय की आवश्यकताओं से अधिक है।

Scanned with CamScanner

गोल्डेनवाइजर (Goldenweiser) ने भी कैमरर से मिलती-जुलती परिभाषा इस प्रकार दी है — "मुद्रा-स्फीति तब उत्पन्न होती है जब वस्तुओं एवं सेवाओं की उपलब्ध पूर्ति की तुलना में मुद्रा की मात्रा अधिक तेजी से बढ़ती है।" (Inflation occurs when the volume of money actively bidding for goods and services increases faster than the available supply of goods.)"

प्रो० पीगू (Pigou) के अनुसार :- "मुद्रा-स्फीति की अवस्था तब होती है जब मौद्रिक आय (Money income) आय उपार्जन सम्बन्धी क्रियाओं की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ रही हो।" Inflation exists when money income is expanding more than in proportion to income-earning activities) इस परिभाषा के अनुसार मूल्य में वृद्धि मुद्रा-स्फीति का सूचक होती है लेकिन सभी प्रकार के बढ़ते हुए मूल्यों से मुद्रा-स्फीति नहीं होती है। मुद्रास्फीति की स्थिति तभी आती है जब मौद्रिक आय (money income) आय उपार्जन सम्बन्धी क्रियाओं (income earning activities) अथवा उत्पादन की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है। प्रो० पीगू (Pigou) के अनुसार मूल्य वृद्धि की केवल निम्नलिखित अवस्थाएँ ही मुद्रा-स्फीति का सूचक होती है :-

(1) जब मौद्रिक आय एवं उत्पादन दोनों में वृद्धि हो रही हो लेकिन मौद्रिक आय उत्पादन की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ रही हो।
(2) जब मौद्रिक आय बढ़ रही हो लेकिन उत्पादन स्थिर हो।
(3) जब मौद्रिक आय बढ़ रही हो लेकिन उत्पादन में कमी हो रही हो।
(4) जब मौद्रिक आय स्थिर हो, लेकिन उत्पादन घट रहा हो।
(5) जब मौद्रिक आय एवं उत्पादन दोनों में कमी हो रही हो लेकिन मौद्रिक आय की तुलना में उत्पादन में अधिक तेजी से कमी हो रही हो।

इस प्रकार प्रो० पीगू द्वारा दी गई मुद्रास्फीति की व्याख्या अधिक वास्तविक एवं संतोषजनक है। वास्तव में वस्तुओं और सेवाओं की तुलना में मुद्रा की मात्रा का आधिक्य ही मुद्रा-स्फीति का द्योतक है। इसलिए कहा जाता है कि मुद्रास्फीति की स्थिति वह है जिसमें बहुसंख्यक मुद्रा अल्पसंख्यक वस्तुओं का पीछा करती है। "(Too much money chasing too few goods.)"